लालकिला, दिल्ली से प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का राष्ट्र के नाम सन्देश

दिनांक: १५-८-७५

बहनो और भाइयो, प्यारे बच्चों,

जैसे कि हर साल वैसे इस साल भी हम सब यहां जमा हुए हैं, अपने राष्ट्र ध्वज को फहराने। अपनी श्रद्धा, अपनी निष्ठा इस को अर्पित करने। लेकिन इस साल एक नई बात भी है। केवल वो लोग जो यहां पे बैठे हैं वो मुझे नहीं देख रहे हैं, भारत के कुछ राज्यों में दो हजार चार सौ गांवों में रहने वाले ग्रामवासी भी हमारे संग एक माने में इस समारोह में शामिल हैं। इस ऐतिहासिक अवसर को वो भी देख पा रहे हैं और जो कुछ हो रहा है वो सुन सक रहे हैं। एक नई चीज हुई, केवल भारत के इतिहास में नहीं, लेकिन शायद पहले दफे दुनियां में उपग्रह के द्वारा पहले ग्राम्य प्रोग्राम शुरू हुए हैं जब सब शहरों में अभी तक टी०वी० नहीं पहुंच पाया है। इसकेलिए हम अपने बुद्धिवान नौजवान वैज्ञानिकों के आभारी है। अपने काम और मेहनत से उन्होंने भारत केलिए एक बहुत बड़ा कदम आगे रखा है। इसी प्रकार से इसी साल एक दूसरा बड़ा काम हमारे वैज्ञानिकों ने किया था, वो था एक उपग्रह अपना बनाया हुआ आसमान में डाला। "आर्य-भट्ट" का नाम आप सब ने सोचा है। यह सब भारत की प्रगति की निशानियां हैं। हमने यहां यह झण्डा फहराया और, क्यों इसको हर साल फहराते हैं? क्यों हमारी इतनी इच्छा थी आजादी के पहले कि लाल किले पे स्वतंत्र भारत का झण्डा उड़ना चाहिये? एक विरोधी दल के नेता ने एक दफे कहा कि यह झण्डा क्या है एक कपड़े का टुकड़ा। कपड़े का टुकड़ा जरूर है, लेकिन यह है कपड़े का टुकड़ा जिस केलिए लाखों स्वतंत्रता सैनानियों ने अपनी जानें, अपनी जिन्दगी बरबाद की। यह है वो कपड़े का टुकड़ा जिस केलिए हमारे बहादुर सैनिकों ने हिमालय की सफेद बर्फ को अपने खून से लाल रंग दिया। यह है वो कपड़े का टुकड़ा और यह ~~झण्डा~~ कपड़े का टुकड़ा है जो भारत की एकता और भारत की ताकत का प्रतीक

है, इसलिए हम कपड़े के टुकड़े के सामने सिर झुकाते हैं, इसलिए इस कपड़े के टुकड़े की शान हमें हमेशा ऊंची रखनी है। इस कपड़े के टुकड़े को कभी नीचा नहीं होने देना है। यह प्रत्येक भारतीय का चाहे वो ऊंचे से ऊंचे ओहदे पे हो, चाहे वो छोटे से छोटा हो, चाहे स्त्री, चाहे पुरुष, चाहे बूढ़ा, चाहे नौजवान, चाहे बच्चा हो, यह बात उसको हमेशा याद रखनी है कि यह कपड़े का टुकड़ा है, लेकिन जान से ज्यादा प्यारा है हमको। जिस तरह से झण्डे के बारे में गलतफहमी पैदा की गई, उसी प्रकार से एक माने में आजादी के बारे में भी गलतफहमी बन दिनों फैलाई गई थी। आजादी कोई जादू नहीं है कि उससे तुरन्त गरीबी दूर हो जाये, कठिनाईयां और कष्ट दूर हो जायें, आजादी से केवल एक दरवाजा खुला, सदियों की घुटन दूर हुई, बस इतना यह है आजादी। आजादी के माने यह नहीं कि जो मनमानी हो सब उसको कर सकें, आजादी के माने यह है कि अपना जो कर्त्तव्य है वो करने का हमें मौका मिला है। आजादी के माने केवल यह नहीं हैं कि एक भारतीय सरकार की हकूमत चले, आजादी के माने हैं कि वो सरकार ऐसा हो जो हिम्मत से, स्वतंत्र रूप से, अपने निर्णय ले सके, हर हरेक समस्या पर स्वतंत्रता से विचार करे, और अपने देश के हित में, विश्वशांति के हित में, अपने कदम आगे बढ़ायें। यह सब है आजादी। हम आजाद हुए इसलिए नहीं कि इस देश में जो है उसको तोड़ें, या अपनी मूल्यवान आदर्शों को भंग करें, लेकिन इसलिए कि जो सदियों से लोग दबे थे, उनको हम ऊपर उठायें, इसलिए कि जो भी बुराइयां आ गई थीं सामन्तवादी के कारण, जातिवाद के कारण, अन्धविश्वास के कारण, जिसके कारण हम पिछड़े गए थे, उन सब बातों से हम लड़ें, उन सब बातों को दूर करें, और इस देश को ऊंचा उठायें। इसकेलिए यह दरवाजा खुला और उसकेलिए हमारे महान नेताओं ने हमें मार्गदर्शन दिया।

जब से हम आजाद हुए बहुत कुछ देश में हुआ है। तरक्की हुई है। मैंने "आर्यभट्ट" की बात आपसे कही, दूसरे उपग्रह की बात कही। लेकिन उसके अलावा कृषि के क्षेत्र में, उद्योग के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, स्वास्थ्य के प्रबन्ध में, जिस दिशा में आप देखें, बहुत कुछ उन्नति हुई है। लेकिन यह सच है कि उस सब उन्नति का लाभ हमारे सब नम

all round progress

गरीब लोगों तक नहीं पहुंच पाया है न तुरन्त पहुंच ही सकता था। पहले देश की बुनियाद हमें बनानी थी, और इतने वर्षों उस बुनियाद बनाने में हम लगे थे। कितने कष्ट आये, आप सब को जानते हैं, किस हिम्मत से आप सब जो यहां बैठे हुए हैं, आप सब करोड़ों जो मेरी आवाज़ सुन रहे हैं, जो लाखों दूर दूर के राज्यों में घूमते देख रहे हैं, आप सब उस समय से गुजरे हैं, हिम्मत से उसका सामना किया है आपने, आपने, और क्योंकि आपकी हिम्मत थी, उस आपके दिल में आशा थी, आपको भरोसा था इसलिए उस कठिनाई से हम पार हो सके हैं। हमने जो रास्ता लिया वो लोकतंत्र का रास्ता था, लेकिन लोकतंत्र के माने क्या? जैसे आजादी के बारे में मैंने कहा, कि लोकतंत्र के माने ये नहीं है कि जिसका चाहे जिस रास्ते पर जाये। अपनी नीति लोग चुन सकते हैं, अपनी विचारधारा अलग रख सकते हैं, अपनी आवाज़ उठा सकते हैं, लेकिन कुछ नियम से चलना होता है। ऐसा रास्ता नहीं पकड़ सकते जिससे दूसरों को कष्ट हो, या जिससे देश के दुर्बल होने का भय हो, या जिससे दूसरी शक्तियों का, दूसरे प्रभाव बाहर से आ सकें, और हमारी नीति में, या हमारी दिशा पर, अपना प्रभाव डाल सकें। मैंने अभी कहा कि हम अपने निर्णय स्वतंत्र रूप से लेते हैं। मैं दोहराना चाहती हूं क्योंकि इस समय, और कुछ साल पहले से, बड़ा जबरदस्त एक प्रचार, गलत प्रचार हो रहा है, झूठी अफवाहें उड़ाई जा रही हैं, मैं फिर से दोहराना चाहती हूं कि यह हमारी जो नीतियां हैं वो किसी एक गुट या दूसरे गुट की नीतियां नहीं हैं। हम एक गुट में नहीं हैं, न दूसरे गुट में हैं, न तीसरे गुट में। हम केवल भारत के हित को देखते हुए आगे बढ़ते हैं। हमने न किसी दूसरे देश को अब हमारे ऊपर या हमारे मामलात में दखल देने दिया, न आज देने दे रहे हैं, न हम कभी आइन्दा देने देंगे, यह बात बिलकुल साफ हो जानी चाहिये। इसके माने नहीं हैं कि हम दूसरे देशों से दोस्ती नहीं चाहते हैं, हम सब देशों से दोस्ती चाहते हैं, विशेषकर जो हमारे पड़ोसी देश हैं उनसे तो दोस्ती, मैत्री, और सहयोग और भी आवश्यक होता है। जो पड़ोसी नहीं हैं उनसे भी हमारी कोशिश है कि दोस्ती भी बढ़े, हर प्रकार का सहयोग, आर्थिक और दूसरा, उनसे बढ़े क्योंकि आजकल की

दुनियां में सब को मिल के चलना है, एक दूसरे की मदद करनी है, और क्योंकि यह मिल के नहीं चल रहे हैं, क्योंकि अक्सर तनाव बढ़ते हैं, तो उसी... वो एक कारण है कि दुनियां को जो तेजी से आगे बढ़ना चाहिये, जो विज्ञान और हमारी नई जानकारी का लाभ उठाना चाहिए, वो करोड़ों करोड़ों लोग आज नहीं उठा पा रहे हैं। इन तनावों, इन झगड़ों इन गलतफहमियों की वजह से। तो हमारी नीति हमेशा रही है कि गलतफहमियों को दूर करें। जहां कहीं कोई झगड़ा है उसे, लड़ाई से नहीं, लेकिन बात-चीत से उसको दूर करने की कोशिश करें, समझौता लाने की कोशिश करें)। तो यही हमारी नीति अपने देश में भी रही है। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ लोगों ने ऐसा सोच लिया कि एक दूसरा उनको रास्ता लेना है। दूसरा रास्ता माने यह नहीं कि कोई खास नीति है। क्योंकि अलग अलग नीति के लोग साथ हो गए थे, लोग जिन की न विदेश नीति में राय मिलती थी, न राष्ट्र नीति में राय मिलती थी, वो सब जुड़ गए थे, इसलिए हम नहीं कह सकते हैं कि नीति के कारण यह आन्दोलन शुरू हुए। लेकिन हम ने देखा कि आहिस्ते आहिस्ते कुछ-पहले से तो बुराइयां कुछ थीं और वो बुराइयां फैलीं, बजाये कम होने के बढ़ीं। क्यों ऐसा हुआ? क्योंकि ऐसा हुआ क्योंकि अनुशासनहीनता बढ़ने फैली। विद्यार्थियों से कहा गया कि तुम स्कूल और कालेज में मत जाओ। मजदूरों से कहा गया कि तुम कारखानों में काम रोको, और इस प्रकार से चाहे शासन में, चाहे जितने काम करने वाले अलग अलग पेशे हैं हरेक में अनुशासन हीनता आई, हरेक ने सोचा कि मौके का कुछ हम अपने स्वार्थ के लिए लाभ उठा लें। देश को सब भूल गए। किस दिशा में जाना है, क्या कार्यक्रम पूरे करने हैं, कितना लम्बा रास्ता है, कितनी कठिनाईयां हैं, क्या क्या खतरे हैं, यह सब बातें ध्यान से हट गईं, और इस स्थिति को हम काबू में लाने की कोशिश तो कर रहे थे, लेकिन इतनी सब तरक्की हुई थी, उसके बावजूद आपको मालूम है कि पिछला वर्ष कितना आर्थिक कठिनाई का था। मंहगाई बढ़ी, बेरोजगारी बढ़ी, आवश्यक वस्तुएं जो आपको मिली नहीं आसानी से, उनकी कमी हुई, और यह स्थिति केवल हमारे देश में नहीं, सारी दुनियां की स्थिति थी। लेकिन हम उससे घबराये नहीं। हमने उसका सामना किया, कुछ ऐसे कदम उठाये जिससे

कि काला बाजार, जमाखोरी, तस्करी इन सब चीजों के, भ्रष्टाचार, इन सब चीजों के खिलाफ जोरदार कदम हमने उठाये, और उसका असर कीमतों पर पड़ना शुरू हो गया लेकिन इन कदमों से भी हमारे विरोधी खुश नहीं थे, बल्कि और उनका गुस्सा बढ़ा किसी तरह से और उन्होंने निर्णय किया कि जैसे आन्दोलन गुजरात में, बिहार में हुए थे, उस प्रकार का आन्दोलन सारे देश में, और विशेष कर के केन्द्र सरकार के विरोध में वो आरम्भ करेंगे । अनेक दल थे और उनमें कुछ ऐसे गुट और तबके भी थे जो न लोकतंत्र में विश्वास करते थे और न अहिंसा में विश्वास करते थे । आप समझ सकते हैं कि इस प्रकार से आन्दोलन अगर देश में चले और उनका असर पड़े तो देश की क्या हालत होगी । क्या जनता के कष्ट उससे नहीं बढ़ता, क्या देश उससे दुर्बल नहीं होता ? किसी भी समय यह असर पड़ता, लेकिन विशेष कर के ऐसे समय एक बदलती दुनियां में जब हर प्रकार के खतरे हैं, हर देश में सब लोग सतर्क हैं कि अपने को कैसे बचायें, देश केलिए कैसे फायदा उठायें, देश को आगे ले जायें, ऐसे वक्त में ऐसा आन्दोलन करना, उसका क्या प्रभाव पड़ता आप सब समझ सकते हैं, आप के बच्चों में, और सब दूसरे लोगों में । तो हम को कुछ कठोर कदम उठाने पड़े, बहुत सोच के बहुत भारी दिल से । लेकिन हम लाचार थे । उससे एक असाधारण स्थिति एक माने में तो कह सकते हैं कि उत्पन्न हुई, लेकिन एक माने में कह सकते हैं कि जो असाधारण स्थिति चल रही थी महीनों नहीं बरसों से, उसको थामनेके केलिए यह कदम हमने लिया और उसका क्या असर हुआ वो आपने देखा । कीमतें गिरने लगीं, एक नया अनुशासन का लहर सा आया, वही बच्चे जो परीक्षा नहीं देना चाहते थे वो परीक्षा केलिए स्वयं खुद जा के बैठे, दूसरे सब तबके भी अपने अपने काम में लगे । इस बीच में थोड़े से भाव तो बढ़े हैं, क्योंकि बरसात के मौसम में हमेशा ही बढ़ते हैं, कुछ प्रकृति का प्रकोप भी आया, बिहार में, उत्तर प्रदेश में, पंजाब, आसाम और शायद कुछ दूसरी जगहों पे भी जबदस्त बाढ़ आया और जितने बड़ बाढ़ पीड़ित लोग हैं उन सब को मेरी गहरी सहानुभूति है । पूरी कोशिश हम कर रहे हैं कि उनको सहायता जल्दी से जल्दी पहुँचे । लेकिन यह सब होते हुए भी हम कह सकते हैं

कि जो दाम बढ़ने की गति थी वो तो पिछले साल ही रुक गई थी, वो बेरोजगारी की बढ़ने की गति थी, वो पिछले साल ही रुक गई थी। इस साल दाम बढ़ना तो खैर ब बिल्कुल ही खतम हो गया। बेरोजगारी अभी है और वो तभी जा सकेगी, जब हम अनुशासन के रास्ते पर आयेंगे, जब हम पैदावार बढ़ाने के रास्ते पर आयेंगे, जब हम सब सोचेंगे कि हम चाहे विद्यार्थी हों, चाहे अध्यापक, चाहे व्यापारी हों, चाहे खरीदार, चाहे लेखक या कलाकार या जो भी इतने हजारों पेशे हमारे देश में है, हम अपने लिए नहीं सोचें, लेकिन सोचें कि हम प्रत्येक व्यक्ति को अपने पेशे के को, अपने को लिए, एक साधन बन जाना है उसके परिवर्तन के लिए, उसकी उन्नति के लिए, जब यह हम सोचेंगे तब जा के हम असल कदम तेजी से आगे बढ़ा सकेंगे। आज जो लोग विरोधीदल के या दूसरे बाहर नहीं है हमारी पूरी कोशिश है कि उनकी देखभाल ठीक से हो। जो दूसरे कदम लिए जा रहे हैं उसके बारे में भी हमने मैंने मुख्यमंत्री, मुख्यमंत्रियों को लिखा है अधिकारियों से वो कहें कि इन सब चीजों में उनको अपना ध्यान देना है, कोई अन्याय न हो, किसी के संग ज्यादती न हो, जो न्याय के रास्ते पे चलने वाले लोग हैं उनकी हमेशा मदद हो, और हर प्रकार से चाहे पुलिस हो, चाहे दूसरे अफसरान हों, वो जनता के मित्र बन के जायें, अगर किसी से सच्ची भूल हुई है, तो उसकी कैसे मदद करें, उसको ठीक करने में। यह समय है एक माने में जब पहले दफे झण्डा फहराया गया था यहां नहीं था, आपको याद होगा कि वो एक दूसरी जगह झण्डा से पे इण्डिया गेट पर फहराया था पहले दफे स्वतंत्र भारत का झण्डा। किस आशा से हमने उसको फहराया? एक हमें लगा कि नया रास्ता खुला है। मैं समझती हूँ कि उस रास्ते से अपने, क्योंकि हम परेशानियों में फंसे थे, इस अनेक समस्याओं को सुलझाने में हम फंसे थे, तो बहुत बहुत सी यह बुराइयां जो थीं, आलस्य की बुराई, भ्रष्टाचार की बुराई, काम ठीक से नहीं करना, यह सब चीज, यह इसको बढ़ने का मौका मिला और शायद जितना हम रोक सकते थे वो पूरा ध्यान हम उसके

तरफ नहीं दे सके । तो एक तरह से आज एक नया मौका हमको मिला है कि जो भूल हुए हैं, जो गलतियां हुई हैं, जो हम अपने रास्ते या नीति से भटक गए हैं, तो फिर से यह नए मौके को हम पकड़ें और फिर से एक नये हिन्दुस्तान को बनाने केलिए हम सब जुट के, मिल के, आगे बढ़ें ।

प्रश्न प्रत्येक देश के सामने हमेशा होते हैं, लेकिन भारत ने इन सब प्रश्नों का, इन सब समस्याओं का सामना एक धीरज से, बहादुरी से किया । चाहे लड़ाई का समय हो, चाहे शांति का समय हो, हमारे सामने बहुत से हमारे बहादुर सिपाही वायु सेना के, नव सेना के, हमारे पुलिस के भाई, वो सब यहां हैं । कभी लोग चर्चा करते हैं कि जैसे पुलिस उनकी दुश्मन है । लेकिन किस के बेटे हैं वो, किस के भाई हैं, किस के पिता हैं, सब ये जनता के लोग हैं । अगर उनसे गलती होती है तो उनको ठीक दिखाइए कि कैसे एक नया तरह का वातावरण, एक मैत्री और सहयोग का वातावरण बनाना है । हमारे जो बहादुर फौज के लोग हैं उनकी बहादुरी केलिए हम सबको उन पर गौरव है, हमेशा रहा है । हमारे सीमा पर वो डट के खड़े रहते हैं, गर्मी सर्दी बारिश, हर समय मौसम में, लेकिन उनको भी मालूम है कि हमारी नीति किसी पे हमला करने की नहीं है, उनको भी मालूम है कि हमारी नीति दोस्ती की है । और जब तक कोई हम पर हमला नहीं करता, तो हमको सतर्क जरूर रहना है । लेकिन हमें कोई हमला नहीं करना है । यह उनको खूब अच्छी तरह से मालूम है । आज एक नया मौका हमको मिला है, और इसलिए कि एक केवल एक दिशा में नहीं लेकिन आर्थिक दिशा में भी अर्थ-व्यवस्था भी हमारी जो है वो आज तेजी से आगे बढ़ने केलिए बिल्कुल तैयार है, इसवक्त जनता की सहायता मिलेगी, सहयोग मिलेगी तब यह काम और मजबूती से हो सकेगा, और इसकेलिए मेरे पास तो बहुत से लोग आये हैं, विद्यार्थी आये हैं, मुझे खुशी है कि वो पढ़ाई में लगे हैं और बहुत से उनमें समाज सेवा के काम को भी उठा रहे हैं । मजदूर उत्पादन बढ़ाने में व्यस्त हैं, हमारे किसान भाई तो हमेशा ही बहुत जबर्दस्त परिश्रम करते हैं, हमें खुशी है कि इस साल अच्छी वर्षा हुई और उनके परिश्रम के अच्छे फल मिलेंगे ।

दूसरे सब लोग भी जो हैं हरेक का कर्तव्य है-एक तो मैंने कहा कि अपने वर्ग को, या पेशे के लोगों को, या अपने दोस्तों को, एक तो उनके प्रति है, कि कैसे उनको आगे बढ़ायें, कैसे उनमें एक नई चेतना लाएं, एक नई विचारधारा लाएं, लेकिन एक दूसरी बात भी है कि प्रत्येक व्यक्ति सोचे उस समय कि मैं क्या कर सकता हूं, या मैं क्या कर सकती हूं, केवल अपने काम में नहीं, अपना काम तो बहुत जरूरी है, लेकिन दूसरे सब काम जो हैं। सफाई का काम है, अपने घर हम साफ रखते हैं कि नहीं, घर के चारों तरफ की जगह साफ है कि नहीं, सड़कें साफ हैं कि नहीं। यह केवल सरकार, या म्युनिस्पैल्टी, या किसी अधिकारी का कर्तव्य नहीं है, यह सारी जनता का कर्तव्य है, प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इसी तरह से दूसरे कार्यक्रम जो हैं कि कोई चीज़ ज़ाया नहीं हो, जितना हमको चाहिये हो और जो बिल्कुल आवश्यक है वही हम खरीदें, उससे ज्यादा नहीं। अगर दाम कहीं बढ़ जाते हैं तो जो गहराई में वो पता लगाने की कोशिश करें कि क्यों ऐसा हो रहा है। इसको क्या वो मिल के रोक नहीं सकतीं? हमको मालूम है कि जब भी उनका संगठन अच्छा बना है वो ऐसे कामों में कामयाब हुई हैं। और पेड़ लगाने हैं, अपने जंगलात को बचाना है, सब लोगों को देखना है कि परिवार नियोजन के कार्यक्रम कैसे सफल हों, इस प्रकार के अनेक कार्यक्रम हैं जो सरकारी भी कहलाये जा सकते हैं लेकिन जिसका असर प्रत्येक व्यक्ति पर है और भारत के भविष्य पर है। इसमें हमको सब को जुट के लग जाना है। हमारे बच्चों को एक नया रास्ता दिखाना है। मुझे खुशी है कि जब से हमने जब से आपतकाल की घोषणा की, कोई खुशी से नहीं की जैसे मैंने आपसे कहा, लेकिन ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई थी कि हम मजबूत हो गए। ~~हम मजबूर हो गए थे।~~ जैसे कहते हैं कि हर काले बादल के पीछे रोशनी होती है, वैसे कभी कभी एक कठोर कदम भी लेना हो, जैसे बीमारी में कड़वी दवा भी पीनी पड़ती है। तो उससे लाभ उठाना चाहिए कि फिर से ~~स्वास्थ्य~~ स्वस्थ हो जायें और इस काम में आज सब को पड़ना है, जैसे देश की राजनीति को, देश की अर्थ व्यवस्था को देश के हर जीवन के हर क्षेत्र में वैसे हम सफाई लाएं, सौंदर्य लाएं, और एक नवीनता भी लायें।

Parallel from here on Part II on Tape No: Pm(S)-TS 20262

Part II

विज्ञान से हमने बहुत कुछ सीखा है, और बहुत कुछ अभी सीखना बाकी है। हम कोई दूसरे देशों से ज्यादा अच्छे नहीं हैं। हर देश के पास अपने गुण हैं और शायद कुछ बुराईयां भी, और हम भी ऐसे ही हैं। लेकिन भारत की परम्परा क्या रही है? परम्परा रही है त्याग और सेवा का आदर करना। परम्परा रही है आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न करने की कोशिश करनी। यह भारत की विशेषता है। तो जहां हम दूसरे देशों से बहुत सी बातें सीखें और आवश्यक सीखने चाहिये, किसी को कभी अपना मन बन्द नहीं करना चाहिये नये विचारों से, लेकिन हमारी जो जड़े हैं अपनी सभ्यता में, उसको हमको नहीं भूलना है, और वो यही है कि हम आध्यात्मिक और विज्ञान की शक्तियों का मिलन करें जिसमें एक नया मनुष्य बने। यह है समय की मांग, यह है समाज की पुकार। बहुत वर्ष पहले जवाहर लाल नेहरू ने कहा आजादी खतरे में है, पूरी ताकत से उसको बचालो। आज फिर आप से यही कहती हूं आजादी खतरे में इसलिए नहीं पड़ती है कि कुछ लोगों को हम बोलने से बन्द रख रहे हैं, वो अच्छी बात नहीं है और उसको भी जाना चाहिए, ये मैं दो दफे पहले कह चुकी हूं। लेकिन आजादी को खतरा तब होता है जब आजादी के माने क्या हैं, लोकतंत्र के सच्चे माने क्या हैं, देश का हित कहां है। इन चीजों को जब हम भूल जाते हैं तब असली आजादी को खतरा होता है। अगर हमें भारत की आजादी बचानी है तो देश में फिर से वो एकता, वो दृढ़ता, वो हिम्मत लानी है जिससे कि सब मिल के पैदावार बढ़ायें। सरकार की तो कोशिश है कि जो रुकावटें रस्ते में हैं उनको दूर करें, लेकिन यह भी सोचना है कि क्यों वो रुकावटें आईं, क्योंकि कुछ लोग नाजायज़ फायदा उठा रहे थे। अगर वो न उठायें नाजायज़ फायदा तो कोई जरूरत नहीं है उनको रोकने केलिए। तो हरेक व्यक्ति को इन सब प्रश्नों पर सोचना है। सच्ची आजादी तब होगी जब हम भारत से गरीबी को हटायें। सच्चा लोकतंत्र तब होगा जब समाजवाद और सेक्युलरइज़म पूरीतौर से देश में रहे। कुछ लोग जो इधर लोकतंत्र का नारा उठा रहे थे वो न समाजवाद में विश्वास करते थे और साम्प्रदायिक काम भी बहुत करते थे। तो यह समय

है कि इन सब बातों पर हम विचार करें और यह भी हम समझें कि सरकार काम कैसे करती है। कुछ लोग कहते हैं कि सारी ताकत मेरे हाथों में है। लेकिन मैं कुछ हुक्म भी दूं तो कैसे कैसे वो हुक्म जाता है। पहले मिनिस्टर के पास जायेगा, फिर बड़े और छोटे अधिकारी के पास जायेगा और फिर अनेक स्तर तक एक एक कर के गांवों में पटवारी तक जा के पहुंचेगा या जो और उससे भी छोटा कोई हो। रस्ते में कभी उसपे पूरा अमल होता है, कभी नहीं होता है, कुछ लोग भूल से उसको कुछ बदल देते हैं, कुछ लोग शायद जान के बदल लेते हैं। कुछ लोग अपना लाभ उठाते हैं उससे और कुछ लोग तो पूरा काम रोकने ही में लगे रहते हैं। यह सब बातें होती हैं और यह एक बड़ा कारण है कि जो नीतियां हमने घड़ी घड़ी आपके सामने रखीं उनको पूरा नहीं कर पाये। वैसे यह ठीक हो सकता है मैं हजारों नहीं लाखों लोगों से मिलती हूं, दुनियां में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इतने लोग इतने तबके के लोग भारत के प्रत्येक कोने कोने के लोगों से करीब करीब रोज़ मिले। बहुत सी खबरें मेरे पास पहुंचती हैं लेकिन तब भी देश इतना विशाल है कि सब खबर नहीं पहुंच सकती। कुछ खबर देर में आती है, कुछ आती ही नहीं है। तो जो जो जहां अपनी जगह पे है वो सोचेगा कि मुझे लोकतंत्र की रक्षा करनी है, मुझे देखना है कि यह गरीबी हटाने के कार्यक्रम आगे बढ़ें, चाहे बड़े से बड़े लोग उसको रोकने की कोशिश करें। मुझे देखना है कि जिस प्रकार का सुन्दर और साफ यह गांव, या यह शहर, या यह गली हो, यह मेरा काम है और जितने दूसरे हमारे प्रोग्राम हैं चाहे अभी जो मैंने ऐलान करे, बीस कार्यक्रम वो तो थोड़े ही से थे बीस, और बहुत से काम करने हैं, बहुत से छोटे छोटे काम हैं और कुछ बड़े बड़े काम हैं, लेकिन जब तक हरेक इसकी जिम्मेदारी नहीं लेगा तब तक हमेशा यह खतरा रहेगा कि रस्ते में कहीं न कहीं इसमें कुछ परिवर्तन आ जाये। तो यह सब बातें हैं।

आज मैं चाहती हूं कि ये एक नई विचारधारा हो, गहराई से सोचने की। नारेबाजी में नहीं पड़ना, आसानी से इधर से हवा आई उधर बहक गए, उधर से आई दूसरे तरफ बहक गए, यह नहीं है। पैर जमा के जिस तरफ हमको चलना है उस उसके तरफ ध्यान उस

पर आँख लगा के, पैर जमा के, आगे बढ़ने को, प्रत्येक व्यक्ति तैयार होगा तो जैसे मैंने अनेक दफे आपसे कहा कि भारत को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता, न भारत के भीतर जो यह जो कार्यक्रम नहीं चाहते हैं, न भारत के बाहर जो ऐसा देश और मजबूत भारत नहीं चाहते हैं। तो इसलिए हम सब यहाँ मिले हैं, आज, यही प्रतिज्ञा करने केलिए कि जो सच्ची आजादी होती है, जो सच्चा है लोकतंत्र होता है, उसकेलिए हम सब मिल के परिश्रम करें, त्याग देने की जरूरत हो तो त्याग दें, देश की सेवा करें। 'यह प्रतिज्ञा आप सब बच्चे बूढ़े सब को मिल के लेनी है। एक नया देश बनाना है जिसकी पुरानी आत्मा फूले और नया ज्ञान भी जो ले के उससे भी लाभ उठा सकें। तो जो मेरे भाई और बहन हैं चाहे दूर आन्ध्र प्रदेश तक में कार्यक्रम जा रहा है, आसाम... आसाम में नहीं, उड़ीसा और और कहीं ऐसे प्रान्तों में। उन सबों को भी मैं अपने तरफ से आप सब के तरफ से नमस्कार करती हूँ। क्योंकि वो और हम सब इस सेना के सिपाही हैं, स्वतंत्र भारत के सिपाही हैं। हमारे पास आस्ते आस्ते साधन बढ़ रहे हैं, लेकिन सब से बड़ा साधन हमारा है हिम्मत, सब से बड़ी ताकत है हमारा मनोबल और हमारा आत्मविश्वास, इनको आप पक्का रखेंगे तभी हम जा के जैसे हिन्दुस्तानी ~~हम~~ बनाना चाहते हैं, ~~बनाना~~ बनना चाहते हैं, जैसा हिन्दुस्तान बनाना चाहते हैं जैसे गरीबों को मदद ~~कर~~ करना चाहते हैं और हरेक धर्म और हरेक वर्ग केलिए अच्छी नौकरी, उसकी आवश्यकताएं पूरी करना, यह सब वादे जो हमने किये और जो आपके स्वप्ने हैं, उनको हम सब पूरा कर सकते हैं। अगर आपको भरोसा है अपने आप में, अगर आपको भरोसा है भारत के भविष्य में, तब मैं आपको दावत देती हूँ यह रास्ता आसान नहीं है, यह रास्ता आराम का नहीं है, यह रास्ता चैन का नहीं है, यह रास्ता है कठिनाई का, यह रास्ता है परिश्रम का, यह रास्ता है काँटों ~~का~~ से भरा हुआ। लेकिन इस रास्ते पे आप चलेंगे तब एक नई दुनिया आप देख पायेंगे, एक नया सन्तोष आपके मन में आयेगा, क्योंकि आपको मालूम होगा कि हम ~~भी~~ इतिहास बना रहे हैं, हम नया भारत बना रहे हैं। आप सब को मैं धन्यवाद देती हूँ। अब मेरे संग

पहले मैं और फिर बच्चे और मेरी आशा है कि आप सब मिल के जयहिन्द का नारा आप बोलें ।

जयहिन्द: जयहिन्द, जयहिन्द : जयहिन्द, जयहिन्द: जयहिन्द ।